9. रविन्द्र नाथ टैगोर : एक और ब्राह्मणवादी कवि. वह गांधी की तरह अंग्रेजों का जन्मजात चमचा था. कभी भी उसे भारत की गुलामी नहीं अखरी. उसने सैंकड़ों कविताएं लिखीं मगर कभी भी भारत को आजाद करने के बारे में कविता नहीं लिखी. इंगलैंड का सम्राट जार्ज पंजम 1911 में भारत आया. उसकी स्तुति/चरण वंदना में टैगोर ने एक कविता लिखी जिसे 27 दिसम्बर 1911 को कांग्रेसियों ने अपने कलकत्ता अधिवेशन में गाया. अपनी स्तुति सुनकर सम्राट खुश हो गया. और एक साल के बाद ही टैगोर को साहित्य में नोबल पुरस्कार सें नवाजा गया तथा उसके एक साल बाद 1915 में टैगोर को "knight" अर्थात " अंग्रेजों का सिपहेसालार" बना दिया गया.

रविन्द्रनाथ टैगोर ने जो कविता लिखी वह इस प्रकार सें हैः

जन, गण, मन अधिनायक, जय, हे भारत भाग्य विधाता!
पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा, द्रविड़, उत्कल, बंग,
विन्ध्य, हिमांचल, यमुना, गंगा उच्छल जलधि तरंग!
तव शुभ नामें जागे, तव शुभ आशीष मांगें
गायें तव जय गाथा
जन गण मंगलदायक, जय हे, भारत भाग्य विधाता
जय हे, जय हे, जय जय जय हे.

उपरोक्त कविता में प्रयोग किये गए शब्दों का सरल भाषा में अर्थ इस प्रकार सें हैं :

जन = जनता, गण = कबीले, रियासतें अर्थात छोटे राज्य, मन = दिलो दिमाग, अधिनायक = बेरोक टोक के अधिकारी, उत्कल = वर्तमान उड़ीसा, बंग = बंगाल, हिमांचल = हिमालय के साथ लगते प्रदेश, उच्छल जलधि तरंग = पानी की लहरें, तव शुभ नामें = तेरा शुभ नाम

अतः उपरोक्त गीत का अर्थ हुआ हम भारतियों के तन मन धन के अधिनायक तेरी जय हो. तू भारत की किस्मत का मालिक है, भाग्य विधाता है. भारत के सभी प्रांत यानि पश्चिम में सिन्ध सें लेकर पूर्व में बंगाल तक, उत्तर में हिमालय सें लेकर दक्षिण के द्रविड़ तक तेरी जय जय कार कर रहे हैं. भारत के सारे पर्वत, विन्ध्यांचल सें लेकर हिमालय तक तेरी जय जय कार कर रहे हैं. भारत की समस्त नदियों, गंगा यमुना आदि का पानी हिलारें खा खा कर तेरे गुण गा रहा है. हमारा मुख तेरा ही शुभ-नाम रटे, तेरा ही शुभ आर्शीवाद मांगे और तेरी ही जयगाथा गाये. हे, जन और गण का शुभ करने वाले तेरी जय हो. हे, भारत के भाग्य विधाता, तेरी जय हो, जय हो, जय हो!!

इस गान के संदर्भ में कुछेक तथ्य ध्यान देने योग्य हैं :

1. यह गान टैगोर ने दिसम्बर 1911 में लिखा. और तब लिखा जब उसके एक दोस्त ने उससें कहा कि अंग्रेज सम्राट जार्ज पंजम भारत भ्रमण पर आया हुआ है. उसकी स्तुति में कांग्रेसियों ने एक गीत गाना है. अतः वह उनके लिए एक स्तुतिगान लिख दे.
2. कहते हैं कि टैगोर ने अपने एक अन्य दोस्त को पत्र लिखा कि अपने दोस्त सें यह सुन कर उसे आश्चर्य (amazement) हुआ कि उसे सम्राट की स्तुति में गीत लिखने के लिए कहा गया है. तब उसने उपरोक्त स्तुतिगान उसे लिख कर दे दिया और कहा कि वह गान कांग्रेसियों को दे दे ताकि वे उसे सम्राट की शान में किए जा रहे अधिवेशन में गा सकें. आजकल यह भी कहा जाने लगा है कि टैगोर ने अपने "दोस्त" को यह भी कहा कि उसने यह गान "भगवान" के लिए लिखा है. अतः टैगोर को यह पता था कि उसने जो गीत भगवान के लिए लिखा है वह **उस भगवान** की शान में गाया जाएगा जिसे लोग जार्ज पंजम कहते हैं.
3. 22 जून 1911 को सम्राट की ताजपोशी हुई थी तथा वह अपनी महारानी के साथ अपनी सबसें बड़ी बस्ती (Colony) भारत में आया था. 11 दिसम्बर 1911 को सम्राट का दिल्ली आगमन हुआ. जार्ज पंजम की स्तुति में कांग्रेसियों ने उसके चित्र को हर गांव में घुमाया तथा हर जगह उसकी पूजा अर्चना करवाई.
4. 27 दिसम्बर 1911 को कांग्रेसियों ने कलकता में एक विशेष अधिवेशन का आयोजन किया जिसका मात्र और मात्र एक ही उद्देश्य था कि भारत आगमन पर अंग्रेज सम्राट जार्ज पंजम की

नई नई हुई ताजपोशी का गुणगान किया जाए. यह गीत भी **सर्वप्रथम** उस कलकता अधिवेशन में गाया गया जिस की प्रधानगी सम्राट ने की थी.

5. उपरोक्त बातों सें एक बात तो तय है कि टैगोर को पता था कि उसके द्वारा लिखा गया स्तुति गान सबसें पहले सम्राट की शान में ही गाये जाना वाला था. टैगोर ने जानते बूझते हुए अपने तथाकथित "भगवान" की शान में लिखा स्तुति गान कांग्रेसियों को उनके "भगवान" की स्तुति में गाने को दे दिया. ऐसा कहीं कोई उदाहरण नहीं मिलता जहां भगवान के लिए लिखा गया स्तुति गान सबसें पहले अपने आका के लिए गा दिया गया हो. और भारत भूमि में भगवान के लिए भजन लिखे जाते हैं वंदनाऐं लिखी जाती हैं जिसमें उसे ब्राह्मण्ड का विधाता बताया जाता है. हमने आज तक एक भी ऐसा भजन नहीं सुना जिसमें भगवान का कार्यक्षेत्र मात्र भारत तक ही सीमित कर दिया गया हो!! उसे मात्र सिन्ध सें लेकर बंगाल तक का भाग्य विधाता बना दिया गया हो!!

6. सन् 1911 के अंत में टैगोर ने यह स्तुति गान लिखा. एक साल के बाद ही उसे (1913 में) नोबल पुरस्कार दे दिया गया. तथा उसके दूसरे साल ही उसे "knight" अर्थात "अंग्रेजों का सिपहेसालार" बना दिया गया. टैगोर ने अपने आकाओं सें सभी इनाम खुशी खुशी स्वीकार किए. 1919 के जलियांवाला बाग के हत्याकांड के विरोध में टैगोर ने सिपेहसलारी तो वापिस लौटा दी मगर अपने अंग्रेज आकाओं के विरुद्ध कभी एक शब्द भी नहीं लिखा.

7. एक तथ्य भी चौंकाने वाला है कि टैगोर को जिस कविता संग्रह (गीतांजलि) के लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया, वह गीतांजलि किसी स्कूल किसी कॉलेज के सलेबस में शामिल नहीं की गई है. उसने गीतांजलि में ऐसा क्या लिखा कि उसे भारतीयों सें छिपाया जा रहा है.

8. यह भी एक तथ्य है कि आज तक कभी किसी मजदूर/कम्युनिस्ट लेखक को नोबल पुरस्कार नहीं दिया गया है जो गरीबों मजदूरों के हित के लिए लिखते हैं

9. भारत के किसी भी प्राचीन या नवीन ग्रन्थ में भगवान को या किसी भी देवता को "भारत भाग्य विधाता" कह कर सम्बोधन नहीं किया गया है. अतः सन् 1911 में टैगोर का "भारत भाग्य विधाता" अंग्रेज सम्राट जार्ज पंजम के सिवाय कौन सा देवता या कौन सा भगवान था, इसका खुलासा कोई नहीं कर पा रहा है.

10. अंग्रेजों ने "वंदे मातृम" गाने पर पाबंदी लगाई लेकिन जन, गण, मन पर कभी पाबंदी नहीं लगाई. इसका कारण यह है कि कांग्रेसियों ने "जन गण मन" का गीत अकेले ही नहीं गाया बल्कि वे अपने आका जार्ज पंजम की फोटो गांव गांव लेकर घूमे तथा हर गांव गली मौहल्ले में उस फोटों के आगे लोगों को नतमस्तक करके यह गीत गवाया. (वे दिन वे लोग)

11. ऐसा कहीं भी सुनने अथवा पढ़ने में नहीं आया कि भारत के क्रांतिकारियों ने कभी भी जन, गण, मन गाया हो!!

12. तत्कालीन कांग्रेसियों की अंग्रेज-स्वामीभक्ति की एक अन्य उदाहरण भारत का राष्ट्रमण्डल (कॉमनवैल्थ) संघ में शामिल होना भी है. इस संघ में केवल वही देश शामिल हो सकते हैं जो कभी इंगलैंड के गुलाम रहे हैं. इस संघ का प्रमुख हमेशा ही इंगलैंड का राजा होता है. भारत कितना भी महान बन लें लेकिन वह कभी भी इस संघ का प्रमुख नहीं बन सकता. फिर भी अपनी गुलामी की यादों को तरोताजा रखने के लिए नेहरु ने भारत को इस संघ का सदस्य बनाया जो आज तक जारी है.

13. संविधान सभा में काम करने के लिहाज सें बाबा साहिब अम्बेडकर का सर्वोच्च स्थान है. उन्होंने भारतीय संविधान बनाने और राष्ट्रीय ध्वज अपनाने में सबसें अधिक योगदान दिया. लेकिन जब राष्ट्रीय गान अपनाने की बात आई तो उनकी अनुपस्थिति में ही जन, गण, मन को राष्ट्रीय गान घोषित कर दिया गया. इस मुद्दे पर बहस भी नहीं की गई बल्कि तत्कालीन राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद ने फतवा दे दिया कि इस गान को कांग्रेसी बरसों सें गाते आ रहे हैं अतः यही राष्ट्रीय गान है. मौलाना इकबाल का गीत "सारे जहां सें अच्छा हिन्दोस्तां हमारा" पर तो बहस ही नहीं की गई.

वैसे यह अत्यंत खुशी की बात है कि इतना भेदभाव होने के बावजूद करोड़ों भारतियों के मोबाइल पर इसी गान की धुन बजती है – सारे जहां सें अच्छा हिन्दोस्तां हमारा!!

14. कांग्रेस की स्थापना विशेष तौर पर इसलिए की गई थी "बड़े लोग" कहे जाने वाले भारतीय इसमें शामिल हो कर आम भारतियों में अंग्रेजों का गुणगान कराते रहें ताकि लोग अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज न उठाएं. जैसे कार में शॉकर लाए जाते हैं ताकि गढे आने पर चालक को झटके कम लगें वैसे ही एक अंग्रेज महिला ने कांग्रेस की स्थापना की थी ताकि अंग्रेजी सरकार की गाड़ी बिना झटकों के चलती रहे.

15. अपनी स्थापना के सन् 1883 सें लेकर सन् 1942 तक कांगेस ने कभी भी अंग्रेजों को भारत छोड़ने को नहीं कहा. आज चाहे यह ढोल पीटे जाते हैं कि 1930 के अधिवेशन में नेहरू ने पूर्ण आजादी की मांग की थी मगर सच्चाई यही है कि कांग्रेसी अंग्रेजों सें हमेशा (dominion state) अर्थात ऐसे राज्य की मांग करते रहे जहां भारत का सर्वोच्च शासक तो अंग्रेज सम्राट हो और शेष मन्त्री भारतीय हों. आज अगर भारत डोमिनियन स्टेट होता तो इंगलैंड का राजा भारत का राष्ट्रपति होता. प्रधान मन्त्री चाहे भारतीय होता मगर उसे हर काम के लिए अंग्रेज संसद सें मंजूरी लेनी पड़ती. सुप्रीम कोर्ट की जगह इंगलैंड के हाउस ऑफ लॉर्डस द्वारा पारित कानून सर्वोच्च होते. लंदन में 1930 सें 1932 तक तीन गोलमेज अधिवेशन हुए जिसमें भारत के सभी नेता शामिल हुए. कांग्रेस की तरफ सें गांधी गया मगर उसने वहां भी डोमिनियन स्टेट की मांग की. **बाबा साहिब पहले भारतीय थे जिन्होंने गोल मेज अधिवेशन में पूर्ण आजादी की मांग की थी.**

16. यहां बस एक बात पर टिप्पणी शेष है वह है कि जब टैगोर को उसके दोस्त ने स्तुति गान लिखने को कहा तो उसे (amazement) आश्चर्य हुआ. अतः उसने "भगवान" की अराधना में यह गान लिख कर अपने दोस्त को दे दिया ताकि उसे कांग्रेसी अपने स्तुति अधिवेशन में गा सकें!

अंग्रेजी भाषा में आश्चर्य के लिए अनेकों शब्द हैं. वहां दुख सें हुई हैरानी, खुशी सें हुई हैरानी, डर सें हुई हैरानी, अप्रत्याशित घटना सें हुई हैरानी आदि के लिए अलग अलग शब्द हैं. जैसे हिन्दी में प्यार के लिए अनेकों शब्द हैं : स्नेह, वात्सल्य, प्रेम, चाह, मोह, लग्न आदि. हिन्दी भाषी बाप बेटी में स्नेह का प्रयोग करते हैं, वात्सल्य तो माँ का अपने बच्चों के प्रति ही होता है, पति पत्नि के सम्बंधों के लिए अक्सर प्रेम का प्रयोग होता है, भगवान सें लग्न या चाह होती है, धन सम्पत्ति के लिए मोह होता है आदि. जैसे वात्सल्य या स्नेह पति पत्नि के सम्बंधों के लिए प्रयोग नहीं किया जाता वैसे ही अंग्रेजी भाषा में (amazement) डर सें, गमी सें हुई हैरानी के लिए प्रयोग नहीं किया जाता. यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि टैगोर को अंग्रेजी लिखने में निपुणता हासिल थी. उसने उसी शब्द का प्रयोग किया जो उस स्थिति में प्रयोग किया जाना चाहिए था.

हिन्दी भाषा में दो मुहावरे हैं : एक है "जमीन पर पैर न लगना" और दूसरा है "पैरों तले सें जमीन निकलना". दोनों ही मुहावरों में व्यक्ति का जमीन सें सम्बंध टूट जाता है. लेकिन जहां पहले में अपार खुशी मिलती है वहीं दूसरे में अत्याधिक दुख मिलता है. अतः जब टैगोर सें यह कहा गया कि वह सम्राट की शान में कविता लिखे तो उसके पैरों तले सें जमीन नहीं खिसकी बल्कि उसके पांव जमीन पर नहीं लगे. और उसने सम्राट को भगवान मान कर पूरे भारत को उसके चरणों में समर्पित कर दिया!! सन 47 में ब्राह्मणों का राजनीति पर वर्चस्व था. अतः एक ब्राह्मणवादी द्वारा रचित 'सम्राट चरण वंदना' दूसरे ब्राह्मणों द्वारा भारत का राष्ट्रीय गान बना दिया गया. और आज पूरा भारत उस चरण वंदना को गाने के लिए मजबूर है. इससें बड़ा धोखाधड़ी और क्या हो सकती है!!

इस स्तुति गान को आज भारत का राष्ट्रीय गान कहा जाता है!!

यह समस्त भारतियों के लिए शर्म की बात है कि हम आज भी अंग्रेज सम्राट की स्तुति को अपने राष्ट्रीय गान के तौर पर गाने को मजबूर हैं.